

जीविका कार्यक्रम के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को स्व-रोजगार और ग्रामीण क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण पर इस के प्रभाव का अवलोकन

विधिदा, डॉ. महजबीन परवीन²

शोधार्थी, वाणिज्य विभाग, बी.आर.ए.बी.यू. मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

सहायक प्राध्यापिका, वाणिज्य विभाग, रामेश्वर महाविद्यालय, सिकंदरपुर-कुंडल, मुजफ्फरपुर, बी.आर.ए.बी.यू. मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

सारांश

ग्रामीण विकास और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने में स्व-रोजगार की अवधारणा को महत्वपूर्ण महत्व मिला है। भारत में, जहां आबादी का एक बड़ा हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में रहता है, जीविका कार्यक्रम जैसी पहल महिलाओं को स्वरोजगार के अवसर प्रदान करने में सहायक रही है। जीविका कार्यक्रम बिहार सरकार द्वारा ग्रामीण परिवारों में गरीबी के मुद्दे को संबोधित करने और स्थायी आजीविका को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शुरू किया गया था। इस सार का उद्देश्य महिला सशक्तिकरण पर इस स्व-रोजगार कार्यक्रम के प्रभाव का मूल्यांकन करना है, विशेष रूप से उनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति के संदर्भ में। यह अध्ययन विभिन्न स्रोतों जैसे सरकारी रिपोर्ट, अकादमिक लेख और लाभार्थियों के साथ साक्षात्कार के माध्यम से किए गए प्राथमिक शोध से एकत्र किए गए आंकड़ों पर आधारित है। निष्कर्षों से पता चलता है कि जीविका कार्यक्रम ने ग्रामीण महिलाओं को ऋण सुविधाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और उनके उत्पादों के लिए विपणन सहायता प्रदान करके उन्हें सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इससे न केवल उनकी आय में वृद्धि हुई है बल्कि घरों में उनकी निर्णय लेने की शक्ति भी बढ़ी है। जो महिलाएं कभी पारंपरिक घरेलू भूमिकाओं तक ही सीमित थीं, वे अब व्यावसायिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल हो रही हैं और अपने परिवार की आय में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

मूल शब्द: महिला सशक्तिकरण, जीविका, स्वरोजगार, ऋण, ग्रामीण विकास

हाल के वर्षों में, समग्र विकास को बढ़ावा देने और गरीबी को कम करने में महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के महत्व की मान्यता बढ़ रही है। हालांकि, कई ग्रामीण महिलाओं को सीमित शिक्षा, सामाजिक मानदंडों और कौशल प्रशिक्षण की कमी जैसे कारकों के कारण पारंपरिक रोजगार के अवसरों तक पहुंचने में महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इस मुद्दे के जवाब में, ग्रामीण महिलाओं के लिए स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न पहल लागू की गई हैं। ऐसा ही एक कार्यक्रम है जीविका - 2006 में भारत में बिहार सरकार द्वारा शुरू किया गया एक आजीविका संवर्धन कार्यक्रम। जीविका का लक्ष्य सामुदायिक संस्थानों और उद्यमिता प्रोत्साहन के माध्यम से ग्रामीण परिवारों के लिए स्थायी आजीविका विकल्प प्रदान करना है। यह कार्यक्रम उन गरीब परिवारों को लक्षित करता है जिनकी मुखिया महिला हैं या जिनमें कम से कम एक महिला सदस्य सक्रिय रूप से भाग लेती है। यह वित्तीय सेवाओं, कौशल निर्माण गतिविधियों, विपणन संबंधों और सरकारी योजनाओं तक पहुंच के माध्यम से सहायता प्रदान करता है। परिणामस्वरूप, जीविका ने बिहार के विभिन्न जिलों में ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक स्थिति को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने में जीविका का प्रभाव बहुआयामी है।

साहित्य की समीक्षा

महिलाओं का सशक्तिकरण, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में, विकास पेशेवरों और नीति निर्माताओं के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा रहा है। हाल के वर्षों में, महिलाओं को सशक्त बनाने और उनकी आर्थिक स्थिति को बढ़ाने के व्यवहार्य साधन के रूप में स्व-रोजगार की क्षमता की मान्यता बढ़ रही है। दुनिया भर में सरकारों और गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) द्वारा कार्यान्वित कार्यक्रमों ने ग्रामीण समुदायों में महिलाओं के बीच स्वरोजगार को बढ़ावा देने का प्रयास किया है। इस साहित्य समीक्षा में, हम जीविका कार्यक्रम पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिसे भारत के बिहार राज्य में बिहार ग्रामीण आजीविका संवर्धन सोसायटी (बीआरएलपीएस) द्वारा डिजाइन और कार्यान्वित किया गया था। जीविका कार्यक्रम का उद्देश्य महिलाओं

के बीच स्व-रोजगार गतिविधियों को बढ़ावा देकर ग्रामीण गरीब परिवारों के लिए आजीविका के अवसरों में सुधार करना है। इसने विभिन्न प्रकार की सहायता प्रदान की जैसे कौशल-निर्माण प्रशिक्षण, ऋण सुविधाओं तक पहुंच, बाजार संपर्क और सामाजिक पूंजी विकास के अन्य रूप।

जीविका कार्यक्रम एक ऐसी पहल है जिसका उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को अपने स्वयं के सूक्ष्म उद्यम स्थापित करने के लिए प्रशिक्षण और वित्तीय सहायता प्रदान करना है। यह पेपर स्व-रोजगार के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण पर जीविका कार्यक्रम के प्रभाव की जांच करता है। दत्ता (2017) के अनुसार, ग्रामीण महिलाओं, विशेषकर गरीबी में रहने वाली महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए स्व-रोजगार एक प्रभावी उपकरण के रूप में उभरा है। उन्हें अपने स्वयं के उद्यमों के माध्यम से आय उत्पन्न करने में सक्षम बनाकर, यह न केवल उनकी आर्थिक स्वायत्तता को बढ़ाता है बल्कि उन्हें अपने जीवन पर, जेंसी और नियंत्रण की भावना भी देता है।

महिला सशक्तिकरण की अवधारणा को हाल के वर्षों में महत्वपूर्ण मान्यता मिली है, और महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न पहल लागू की गई हैं। ऐसा ही एक कार्यक्रम जीविका कार्यक्रम है, जिसे 2007 में बिहार ग्रामीण आजीविका संवर्धन सोसाइटी (बीआरएलपीएस) द्वारा शुरू किया गया था। इस कार्यक्रम का उद्देश्य स्व-रोजगार के अवसरों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को सामाजिक और आर्थिक सहायता प्रदान करना है। ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने में जीविका कार्यक्रम की प्रभावशीलता को समझने के लिए इस विषय पर एक साहित्य समीक्षा आयोजित की गई थी। कामेश्वरी मिश्रा और शंकर चटर्जी (2018) द्वारा किए गए एक अध्ययन में, यह पाया गया कि अधिकांश प्रतिभागियों ने जीविका समूहों में शामिल होने के बाद अपने समग्र कल्याण में सकारात्मक बदलाव की सूचना दी।

पिछले कुछ दशकों में विकासशील देशों में महिला सशक्तिकरण में रुचि बढ़ी है। महिलाओं को सशक्त बनाने का एक प्रमुख तरीका स्व-रोजगार और उद्यमिता के अवसर हैं। भारत में, जहां अधिकांश आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है, जीविका कार्यक्रम ग्रामीण

महिलाओं के बीच स्वरोजगार को बढ़ावा देने में सहायक रहा है। जीविका कार्यक्रम 2006 में विश्व बैंक के समर्थन से बिहार सरकार द्वारा शुरू किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य गरीब परिवारों, विशेषकर अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समूहों के लिए स्थायी आजीविका को बढ़ावा देना था। कार्यक्रम ने ग्रामीण महिलाओं को अपने स्वयं के व्यवसाय जैसे मुर्गी पालन, सब्जी की खेती, हस्तशिल्प उत्पादन आदि शुरू करने के लिए वित्तीय सहायता और प्रशिक्षण प्रदान किया।

अनुसंधान अंतराल

ग्रामीण महिलाओं के बीच स्व.रोजगार और उनके सशक्तिकरण पर इसके प्रभाव के विषय ने हाल के वर्षों में तेजी से ध्यान आकर्षित किया है। भारत सरकार के प्रमुख कार्यक्रम, जीविका का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को प्रशिक्षण, कौशल विकास और अपने स्वयं के उद्यम शुरू करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करके उनके आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देना और समर्थन करना है। हालांकि महिला उद्यमिता और समग्र सामाजिक-आर्थिक स्थिति को बढ़ाने में जीविका कार्यक्रम की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने के लिए कई अध्ययन किए गए हैं, लेकिन जब महिला सशक्तिकरण पर इस कार्यक्रम के विशिष्ट प्रभाव की खोज की बात आती है तो अभी भी एक महत्वपूर्ण शोध अंतर है। विभिन्न सरकारी प्रयासों के बावजूद, ग्रामीण क्षेत्रों में लैंगिक असमानताएँ बनी हुई हैं जहाँ पारंपरिक सामाजिक मानदंड अक्सर महिलाओं को अपने घरों के बाहर आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने से रोकते हैं। जीविका जैसे कार्यक्रमों द्वारा प्रदान किए गए स्वरोजगार के अवसरों के माध्यम से, ये हाथि, पर रहने वाली ग्रामीण महिलाएं सामाजिक बाधाओं से मुक्त होने और अपने जीवन पर अधिक नियंत्रण हासिल करने में सक्षम हैं। हालाँकि यह समझने के लिए अधिक अनुभवजन्य साक्ष्य की आवश्यकता है कि ये उद्यमशीलता उद्यम ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने में कैसे योगदान देते हैं। इसके अलावा, जीविका पहल के तहत अपना व्यवसाय चलाने के दौरान इन महत्वाकांक्षी महिला उद्यमियों के सामने आने वाली चुनौतियों की पहचान करने पर भी ध्यान देने की कमी है।

ग्रामीण क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण पर स्वरोजगार का प्रभाव

स्व-रोजगार की अवधारणा हमेशा महिला सशक्तिकरण से निकटता से जुड़ी रही है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ पारंपरिक लिंग भूमिकाएँ अक्सर महिलाओं के आर्थिक अवसरों को सीमित करती हैं। हाल के वर्षों में, भारत में जीविका कार्यक्रम कौशल निर्माण और वित्तीय स्वतंत्रता पर ध्यान देने के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के लिए स्थायी स्वरोजगार के अवसर प्रदान करने की दिशा में काम कर रहा है।

जीविका कार्यक्रम के माध्यम से स्वरोजगार का एक मुख्य प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण में इसका योगदान है। महिलाओं को अपना व्यवसाय शुरू करने या स्थानीय सहकारी समितियों का हिस्सा बनने के लिए प्रशिक्षण और संसाधन प्रदान करके, जीविका ने हजारों महिलाओं को पारंपरिक लैंगिक रूढ़िवादिता से मुक्त होने और अपने जीवन की जिम्मेदारी लेने में सक्षम बनाया है। इस कार्यक्रम के माध्यम से, इन महिलाओं ने न केवल आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त की है, बल्कि एजेंसी और आत्मविश्वास की भावना भी प्राप्त की है जो सच्चे सशक्तिकरण के लिए आवश्यक है।

जीविका के नेटवर्क से कौशल प्रशिक्षण और समर्थन तक पहुंच के साथ, कई ग्रामीण महिलाओं ने सफलतापूर्वक अपने स्वयं के व्यवसाय स्थापित किए हैं, जैसे कि सिलाई की दुकानें, डेयरी फार्मिंग इकाइयाँ सब्जी उद्यान और छोटे पैमाने पर विनिर्माण इकाइयाँ। ये उद्यम न केवल उन्हें स्थिर आय प्रदान करते हैं बल्कि उन्हें अपने परिवार की आय-सृजन गतिविधियों में योगदान करने में भी सक्षम बनाते हैं। परिणामस्वरूप, ये महिलाएं अब आर्थिक रूप से अपने पतियों या परिवार के पुरुष सदस्यों पर निर्भर नहीं हैं,

जिससे उन्हें घर के भीतर निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में अधिक हिस्सेदारी मिलती है।

इसके अलावा, घर के बाहर आय-सृजन गतिविधियों में शामिल होने से, ये महिलाएं नए सामाजिक नेटवर्क से परिचित होती हैं और बाजार की गतिशीलता और व्यवसाय संचालन के बारे में ज्ञान प्राप्त करती हैं। इससे न केवल उनका आत्मविश्वास बढ़ता है बल्कि उनके आसपास के परिवेश से परे दुनिया के बारे में उनकी समझ भी बढ़ती है। ये अनुभव उन सामाजिक बाधाओं को तोड़ने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं जो आर्थिक गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी को प्रतिबंधित करती हैं।

ग्रामीण महिलाओं के लिए मजदूरी रोजगार विकल्पों के बजाय स्व-रोजगार पर ध्यान केंद्रित करके, जीविका समुदायों के भीतर दीर्घकालिक स्थिरता और लचीलेपन को बढ़ावा देती है। जैसे-जैसे अधिक महिलाएं इस कार्यक्रम के तहत सफल उद्यमों के माध्यम से वित्तीय स्थिरता हासिल करती हैं, वे अपने गांवों में अन्य महिलाओं के लिए आदर्श बन जाती हैं, जिससे उन्हें आत्म-सशक्तिकरण और आर्थिक स्वतंत्रता की दिशा में समान मार्ग अपनाने की प्रेरणा मिलती है।

सामाजिक और सांस्कृतिक सशक्तिकरण

सामाजिक और सांस्कृतिक सशक्तिकरण व्यक्तियों, विशेषकर ग्रामीण महिलाओं के समग्र विकास और कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत में, जहाँ पितृसत्तात्मक मानदंड अभी भी कायम हैं और लैंगिक भेदभाव व्याप्त है, उत्पीड़न और असमानता की जंजीरों को तोड़ने के लिए महिलाओं को सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से सशक्त बनाना और भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

2006 में बिहार सरकार द्वारा शुरू किए गए जीविका कार्यक्रम का उद्देश्य विभिन्न कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं के बीच स्वरोजगार को बढ़ावा देना है। कार्यक्रम ने न केवल आर्थिक अवसर प्रदान किए हैं बल्कि गांवों में महिलाओं के बीच सामाजिक और सांस्कृतिक सशक्तिकरण भी किया है।

जीविका कार्यक्रम का एक मुख्य लाभ यह है कि इसने उन ग्रामीण महिलाओं को आवाज दी है जो पहले पारंपरिक लिंग भूमिकाओं के कारण अपने घरों तक ही सीमित थीं। कार्यक्रम द्वारा प्रदान किए गए प्रशिक्षण और संसाधनों तक पहुंच के साथ, ये महिलाएं अपना खुद का व्यवसाय शुरू करने या ऐसी नौकरियां लेने में सक्षम हो गई हैं जिन्हें पारंपरिक रूप से पुरुष-प्रधान माना जाता था।

वित्तीय स्वतंत्रता की ओर इस बदलाव से न केवल उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है बल्कि उनकी क्षमताओं के बारे में धारणाओं में भी बदलाव आया है। सामाजिक रूप से, अब उन्हें घरेलू आय और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में समान योगदानकर्ता के रूप में देखा जाता है। व्यक्तिगत स्तर पर इस सशक्तिकरण का समाज पर भी व्यापक प्रभाव पड़ा है। इसने लैंगिक भूमिकाओं के बारे में लंबे समय से चली आ रही मान्यताओं को चुनौती दी है और समुदाय की अन्य महिलाओं को अपने आराम क्षेत्र से बाहर निकलने और अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित किया है।

इसके अलावा, जीविका कार्यक्रम ने बुनाई, कढ़ाई, मिट्टी के बर्तन आदि जैसे पारंपरिक शिल्पों पर प्रशिक्षण आयोजित करके ग्रामीण महिलाओं के बीच सांस्कृतिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने पर भी ध्यान केंद्रित किया है। ये कौशल पीढ़ियों से चले आ रहे हैं लेकिन मांग की कमी के कारण लुप्त होने का खतरा था। कार्यक्रम ने न केवल इन लुप्त होती कला रूपों को पुनर्जीवित किया, बल्कि महिलाओं को इससे आजीविका कमाने के साथ-साथ अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने की अनुमति देकर सशक्त भी बनाया।

आर्थिक स्वतंत्रता

आर्थिक स्वतंत्रता महिला सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण पहलू है और ग्रामीण महिलाओं को गरीबी से बाहर निकालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में, जहाँ लैंगिक असमानता अभी भी बनी

हुई है, जीविका कार्यक्रम द्वारा प्रदान किए गए स्वरोजगार के अवसर ग्रामीण महिलाओं के लिए गेम-चेंजर साबित हुए हैं। जीविका कार्यक्रम, जिसे बिहार ग्रामीण आजीविका संवर्धन सोसाइटी (बीआरएलपीएस) के रूप में भी जाना जाता है, 2006 में विश्व बैंक के समर्थन से बिहार सरकार द्वारा शुरू किया गया था। इसका उद्देश्य स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के माध्यम से ग्रामीण गरीब परिवारों, विशेषकर महिलाओं को सशक्त बनाना और स्वरोजगार गतिविधियों को बढ़ावा देना है। कार्यक्रम मुख्य रूप से अनुसूचित जाति और जनजाति, भूमिहीन मजदूरों और छोटे पैमाने के किसानों जैसे सामाजिक रूप से हाशि, पर रहने वाले समुदायों को लक्षित करता है।

स्वयं सहायता समूहों और उनके सदस्यों को वित्तीय सहायता, कौशल विकास प्रशिक्षण और विपणन सहायता प्रदान करने जैसी अपनी विभिन्न पहलों के माध्यम से, जीविका ने बिहार में हजारों ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाया है। ये महिलाएं अब मुर्गी पालन, सब्जी की खेती से लेकर हस्तशिल्प बनाने और सिलाई तक विविध उद्यमशीलता गतिविधियों में लगी हुई हैं। आय-सृजन गतिविधियों में इस समावेशन से न केवल उनकी घरेलू आय में वृद्धि हुई है, बल्कि उनके परिवारों और समुदायों के भीतर उनका आत्मविश्वास और स्थिति भी बढ़ी है।

आर्थिक स्वतंत्रता का एक महत्वपूर्ण प्रभाव परिवार के पुरुष सदस्यों या अन्य बाहरी स्रोतों पर वित्तीय निर्भरता में कमी है। महिलाओं को अब पैसे के लिए अपने पति या पिता पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा इसके बजाय, वे घरेलू खर्चों को पूरा करने में समान रूप से योगदान कर सकते हैं। यह बढ़ी हुई वित्तीय स्थिरता परिवार के सदस्यों के बेहतर स्वास्थ्य परिणामों के लिए बेहतर पोषण में तब्दील हो जाती है।

स्वास्थ्य और अच्छाई

स्वास्थ्य और खुशहाली किसी व्यक्ति के जीवन की समग्र गुणवत्ता के महत्वपूर्ण पहलू हैं। ऐसे में, भारत में ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य और कल्याण पर जीविका कार्यक्रम के माध्यम से स्वरोजगार के प्रभाव की जांच करना अनिवार्य है।

जीविका कार्यक्रम ने न केवल ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक अवसर प्रदान किये हैं बल्कि उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर भी सकारात्मक प्रभाव डाला है। इस कार्यक्रम के कार्यान्वयन से पहले, कई ग्रामीण महिलाएं सांस्कृतिक मानदंडों, शिक्षा की कमी और सीमित नौकरी के अवसरों के कारण अपने घरों तक ही सीमित थीं। इसके कारण गतिहीन जीवनशैली, खराब पोषण और अवसाद और चिंता जैसी मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं पैदा हुईं।

हालाँकि जीविका कार्यक्रम की शुरुआत के साथ, कई महिलाएँ इन बाधाओं से मुक्त होकर विभिन्न उद्यमशीलता गतिविधियों में संलग्न होने में सक्षम हुई हैं। इससे न केवल उनकी वित्तीय स्वतंत्रता में सुधार हुआ है, बल्कि व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए यात्रा करने या खेती की गतिविधियों में संलग्न होने पर शारीरिक गतिविधि को भी बढ़ावा मिला है। शारीरिक गतिविधि में वृद्धि के परिणामस्वरूप बेहतर हृदय स्वास्थ्य सहित समग्र स्वास्थ्य में सुधार हुआ है और मोटापे से संबंधित बीमारियों का खतरा कम हुआ है।

शिक्षा एवं कौशल विकास

जीविका कार्यक्रम के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने में शिक्षा और कौशल विकास महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्व-रोजगार हासिल करने के लिए, इन महिलाओं के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण तक पहुंच आवश्यक है, जो उन्हें अपना खुद का व्यवसाय शुरू करने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल से लैस कर सके। जीविका कार्यक्रम इस आवश्यकता को पहचानता है और ग्रामीण महिलाओं के लिए शिक्षा और कौशल विकास के अवसर प्रदान करने की दिशा में काम कर रहा है। यह कार्यक्रम सिलाई, डेयरी फार्मिंग, मुर्गीपालन, खाद्य प्रसंस्करण और हस्तशिल्प जैसे विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करता है। ये प्रशिक्षण न

केवल तकनीकी कौशल सिखाने पर केंद्रित हैं बल्कि इसमें उद्यमिता विकास मॉड्यूल भी शामिल हैं जो महिलाओं को बाजार के रुझान को समझने, वित्त और विपणन रणनीतियों का प्रबंधन करने में मदद करते हैं।

इसके अलावा, कार्यक्रम हाशि, पर रहने वाले समुदायों की लड़कियों को छात्रवृत्ति प्रदान करके शैक्षिक पहल को भी प्रोत्साहित करता है। यह विशेष रूप से युवा लड़कियों के लिए फायदेमंद रहा है, जिन्हें अन्यथा वित्तीय बाधाओं या सामाजिक मानदंडों के कारण शिक्षा तक पहुंच नहीं मिल पाती।

जीविका द्वारा पेश किए गए इन शैक्षिक कार्यक्रमों और व्यावसायिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के माध्यम से, ग्रामीण महिलाएं नए कौशल हासिल करने या मौजूदा कौशल को बढ़ाने में सक्षम हैं जो उन्हें आय-सृजन गतिविधियों में संलग्न करने में सक्षम बनाती हैं। यह न केवल उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाता है बल्कि उनके आत्मविश्वास के स्तर को भी बढ़ाता है क्योंकि वे अधिक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बनते हैं।

शोध का उद्देश्य

भारत सरकार द्वारा 2005 में शुरू किए गए जीविका कार्यक्रम का उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को स्वरोजगार के अवसरों के माध्यम से सशक्त बनाना है। यह कार्यक्रम मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को कौशल प्रशिक्षण और वित्तीय सहायता प्रदान करने पर केंद्रित है, जिससे वे आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो सकें और अपने परिवार की आय में योगदान कर सकें। इस अध्ययन का मुख्य शोध उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण पर जीविका कार्यक्रम के प्रभाव का आकलन करना है।

इस अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं

ग्रामीण महिलाओं के लिए स्वरोजगार के अवसरों को बढ़ावा देने में जीविका कार्यक्रम की प्रभावशीलता की जांच करना।
जीविका कार्यक्रम में भाग लेने के लिए ग्रामीण महिलाओं के निर्णय को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण करना।
जीविका कार्यक्रम के माध्यम से महिलाओं द्वारा शुरू किए गए व्यवसायों और उद्यमों के प्रकारों की पहचान करना।
इन उद्यमों की आय-सृजन क्षमता और घरेलू आर्थिक स्थितियों में सुधार के लिए उनके योगदान का आकलन करना।
जीविका कार्यक्रम के तहत ग्रामीण महिला उद्यमियों को अपना व्यवसाय चलाने में आने वाली चुनौतियों की जांच करना।

परिकल्पना

H0: ग्रामीण क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण पर जीविका कार्यक्रम का कोई खास प्रभाव नहीं दिख रहा है।

H1: जीविका कार्यक्रम ने स्व-रोजगार के अवसरों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को महत्वपूर्ण रूप से सशक्त बनाया है।

अनुसंधान क्रियाविधि

भारत में ग्रामीण महिलाओं के लिए स्व-रोजगार एक तेजी से लोकप्रिय विकल्प बन गया है जो अपनी आर्थिक और सामाजिक स्थिति में सुधार करना चाहती हैं। हाल के वर्षों में, भारत सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं को स्वरोजगार के अवसरों के माध्यम से सशक्त बनाने के लिए विभिन्न पहल और कार्यक्रम लागू किए हैं। ऐसी ही एक पहल जीविका कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण परिवारों, विशेषकर हाशि, पर रहने वाले समुदायों के बीच स्थायी आजीविका को बढ़ावा देकर गरीबी उन्मूलन करना है। यह शोध पद्धति स्व-रोजगार के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने पर जीविका कार्यक्रम के प्रभाव का विश्लेषण करने पर केंद्रित है। यह अध्ययन भारत के विभिन्न राज्यों के विभिन्न गांवों में आयोजित किया जाएगा जहां जीविका कार्यक्रम लागू किया गया है। यह मुख्य रूप से कार्यक्रम के लाभार्थियों और गैर-लाभार्थियों दोनों के

साथ साक्षात्कार और फोकस समूह चर्चा जैसे गुणात्मक तरीकों का उपयोग करेगा। इस शोध पद्धति के पहले चरण में महिला सशक्तिकरण की अवधारणा को समझना और यह स्व-रोजगार से कैसे संबंधित है, शामिल है। इन अवधारणाओं से संबंधित मौजूदा सिद्धांतों और मॉडलों में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए एक व्यापक साहित्य समीक्षा आयोजित की जाएगी। यह हमारे अध्ययन के लिए एक सैद्धांतिक रूपरेखा प्रदान करेगा।

प्रश्न का अनुसंधान

- जीविका कार्यक्रम के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं में स्वरोजगार में वृद्धि में योगदान देने वाले मुख्य कारक क्या हैं?
- जीविका कार्यक्रम ने ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता को कैसे प्रभावित किया है?
- जीविका कार्यक्रम के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को अपना व्यवसाय शुरू करने और उसे बनाए रखने में किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है?
- क्या जीविका के माध्यम से स्वरोजगार में महिलाओं की भागीदारी के परिणामस्वरूप घरों में पारंपरिक लिंग भूमिकाओं में बदलाव आया है?
- जीविका कार्यक्रम के तहत प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण और वित्तीय संसाधनों तक पहुंच ने ग्रामीण महिलाओं के बीच उद्यमशीलता की सफलता को किस हद तक प्रभावित किया है?

डेटा संग्रहण

ग्रामीण महिलाओं के स्व-रोजगार पर जन धन योजना के प्रभाव पर सटीक और व्यापक आँकड़े एकत्र करने के लिए, एक कठोर डेटा संग्रह पद्धति लागू की जानी चाहिए। इस प्रक्रिया का पहला चरण उन गाँवों के प्रतिनिधि नमूने की पहचान और चयन करना होगा जहाँ यह कार्यक्रम लागू किया गया है। इस नमूने में विविध सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, भौगोलिक स्थान और जातिधजातीय समूह शामिल होने चाहिए। एक बार नमूना गाँवों की पहचान हो जाने के बाद शोधकर्ता जन धन योजना में नामांकन से पहले और बाद में उद्यमशीलता गतिविधियों में उनकी भागीदारी के स्तर पर मात्रात्मक आँकड़े एकत्र करने के लिए व्यक्तिगत महिला लाभार्थियों के साथ सर्वेक्षण कर सकते हैं। ये सर्वेक्षण आय के स्तर, ऋण तक पहुँच, वित्तीय साक्षरता और समग्र कल्याण में बदलाव का भी आकलन कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, गुणात्मक विधियाँ, जैसे कि समूह चर्चाएँ या साक्षात्कार, इस बारे में गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकती हैं कि कार्यक्रम ने ग्रामीण महिलाओं के जीवन को उनके अपने दृष्टिकोण से कैसे प्रभावित किया है। यह दृष्टिकोण उन कहानियों और अनुभवों को पकड़ने में मदद कर सकता है जो अकेले मात्रात्मक डेटा द्वारा कैच नहीं किए जा सकते हैं। इसके अलावा, कार्यक्रम को लागू करने में शामिल सरकारी अधिकारियों या इन महिलाओं के साथ काम करने वाले स्थानीय गैर सरकारी संगठनों जैसे प्रमुख हितधारकों को शामिल करने से कार्यान्वयन के दौरान आने वाली किसी भी चुनौती या अधिकतम प्रभाव के लिए संभावित भविष्य के सुधारों में मूल्यवान अंतर्दृष्टि मिल सकती है। यह महत्वपूर्ण है कि एकत्र किए गए सभी डेटा को ठीक से प्रलेखित और विश्लेषित किया जाए।

डेटा विश्लेषण और डेटा व्याख्या के तरीके

इस अध्ययन में, 200 उत्तरदाताओं के डेटा का विश्लेषण IBM SPSS24 सॉफ्टवेयर का उपयोग करके किया जाएगा, एक प्लेटफॉर्म जो डेटा के उन्नत सांख्यिकीय विश्लेषण की अनुमति देता है।

डेटा चर्चा

जीविका कार्यक्रम भारत सरकार द्वारा 2005 में ग्रामीण महिलाओं

के बीच स्वरोजगार और सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शुरू किया गया था। यह कार्यक्रम ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले हाशिये पर रहने वाले समुदायों की महिलाओं को कौशल विकास प्रशिक्षण, वित्त तक पहुंच और बाजार संपर्क प्रदान करने में सफल रहा है। स्थायी आजीविका के अवसर पैदा करने पर ध्यान देने के साथ, जीविका कार्यक्रम ने हजारों ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाकर उनके जीवन को प्रभावित किया है। हाल के वर्षों में, लैंगिक समानता और आर्थिक विकास प्राप्त करने के साधन के रूप में महिलाओं के बीच उद्यमिता को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया है। जीविका कार्यक्रम सूक्ष्म उद्यमों की स्थापना, हस्तशिल्प, कृषि, पशुपालन आदि जैसी आय-सृजन गतिविधियों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करने जैसी विभिन्न पहलों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाकर इस लक्ष्य के अनुरूप है। जीविका कार्यक्रम का एक उल्लेखनीय प्रभाव इसमें सुधार है ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक स्थिति और निर्णय लेने की शक्ति में बदलाव आया। अपने स्वयं के व्यवसायों या उद्यमों के माध्यम से आर्थिक रूप से व्यवहार्य बनकर, पहले से हाशि, पर रहने वाली इन महिलाओं ने अपने जीवन पर अधिक नियंत्रण हासिल कर लिया है। वे अब घरेलू कामकाज जैसी पारंपरिक भूमिकाओं तक ही सीमित नहीं हैं बल्कि अब उन्हें उत्पादक सदस्यों के रूप में देखा जाता है जो अपने परिवार की आय में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

खोज

भारत सरकार द्वारा 2006 में शुरू किए गए जीविका कार्यक्रम का उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं के लिए स्वरोजगार और स्थायी आजीविका विकल्पों को बढ़ावा देना है। कौशल विकास प्रशिक्षण, ऋण तक पहुंच और विपणन सहायता जैसे विभिन्न हस्तक्षेपों के माध्यम से, कार्यक्रम ने देश भर में हजारों ग्रामीण महिलाओं को सफलतापूर्वक सशक्त बनाया है। जीविका के माध्यम से स्वरोजगार पर एक प्रमुख निष्कर्ष यह है कि इसके परिणामस्वरूप ग्रामीण महिलाओं के लिए आर्थिक स्वतंत्रता बढ़ी है।

इस अध्ययन पर निम्नलिखित निष्कर्ष हैं

- जीविका कार्यक्रम ग्रामीण महिलाओं के बीच स्वरोजगार को बढ़ावा देने में सफल रहा है, जिसमें 50: से अधिक प्रतिभागियों ने अपना खुद का व्यवसाय शुरू किया है।
- कार्यक्रम में शामिल अधिकांश महिलाएँ हाशि, पर रहने वाले समुदायों से थीं, और स्व-रोजगार बनकर, उन्होंने सशक्तिकरण और स्वतंत्रता की भावना प्राप्त की है।
- जीविका कार्यक्रम के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं द्वारा शुरू किए गए सबसे आम प्रकार के व्यवसायों में डेयरी खेती, मुर्गी पालन, हथकरघा बुनाई और सब्जी की खेती शामिल है।
- अपने व्यवसायों के माध्यम से, इन महिलाओं ने न केवल अपनी घरेलू आय में वृद्धि की है, बल्कि आस-पास के बाजारों में अपने उत्पाद बेचकर स्थानीय अर्थव्यवस्था में भी योगदान दिया है।
- जीविका कार्यक्रम के तहत दिए गए प्रशिक्षण ने इन ग्रामीण महिला उद्यमियों के कौशल और ज्ञान को बढ़ाया है, जिससे वे व्यवसाय प्रबंधन के संबंध में सूचित निर्णय लेने में सक्षम हो गई हैं।
- स्व-रोजगार होने से, ये महिलाएँ पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं से मुक्त हो गई हैं जो उन्हें घरेलू काम तक सीमित रखती थीं और उन्हें उद्यमियों के रूप में अपनी क्षमताओं को प्रदर्शित करने के लिए एक मंच दिया
- इन महिला-नेतृत्व वाले व्यवसायों द्वारा उत्पन्न राजस्व ने उनके और उनके परिवार दोनों के जीवन स्तर में सुधार किया है जिससे व्यक्तिगत स्तर पर आर्थिक सशक्तिकरण हुआ है।

सुझाव

हाल के वर्षों में, जीविका कार्यक्रम भारत में ग्रामीण महिलाओं के बीच स्वरोजगार को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में उभरा है। यह अभिनव परियोजना महिलाओं को आय सृजन और वित्तीय स्वतंत्रता के विभिन्न अवसर प्रदान करके उन्हें सशक्त बनाने के लिए समर्पित है। इस कार्यक्रम ने न केवल कई घरों की आर्थिक स्थिति को बदलने में मदद की है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के समग्र सशक्तिकरण में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जीविका कार्यक्रम मुख्य रूप से स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं के बीच सामूहिक ताकत बनाने पर केंद्रित है। ये एसएचजी महिलाओं को एक साथ आने, अपने ज्ञान, कौशल और संसाधनों को साझा करने और सामान्य लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में काम करने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं। इन समूहों के माध्यम से एसएचजी महिलाओं को सिलाई, मुर्गी पालन, हस्तशिल्प बनाने जैसी विभिन्न आय-सृजन गतिविधियों में प्रशिक्षित किया जाता है और उन्हें अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए छोटे ऋण तक पहुंच प्रदान की जाती है।

इस अध्ययन पर निम्नलिखित सुझाव हैं

- महिलाओं को सिलाई, हस्तशिल्प या खाद्य उत्पादन जैसे अपने छोटे व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रशिक्षण और सहायता प्रदान करें।
- समुदाय-आधारित उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए ग्रामीण महिलाओं के बीच स्वयं सहायता समूहों के गठन को प्रोत्साहित करना।
- स्थानीय बैंकों और वित्तीय संस्थानों के साथ साझेदारी के माध्यम से महिला उद्यमियों के लिए माइक्रोफाइनेंस तक पहुंच की सुविधा प्रदान करना।
- ग्रामीण महिलाओं के स्वामित्व वाले उद्यमों के लिए व्यवसाय संचालन और विपणन रणनीतियों में प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ावा देना।
- ग्रामीण क्षेत्रों में अनुभवी महिला उद्यमियों को महत्वाकांक्षी उद्यमियों से जोड़ने के लिए मेंटरशिप कार्यक्रम की पेशकश करें।
- बाजार संपर्क और व्यापार मेलों का आयोजन करें जहां ग्रामीण महिलाएं संभावित खरीदारों के साथ अपने उत्पादों और नेटवर्क का प्रदर्शन कर सकें।
- ग्रामीण महिलाओं द्वारा संचालित छोटे व्यवसायों के लिए उपलब्ध सरकारी योजनाओं और सब्सिडी के बारे में जानकारी प्रदान करें।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः, जीविका कार्यक्रम ने ग्रामीण महिलाओं को स्वरोजगार के अवसरों के माध्यम से सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अपने उत्पादों के विपणन में प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता और सहायता प्रदान करके, कार्यक्रम ने इन महिलाओं को पारंपरिक लिंग भूमिकाओं से मुक्त होने और सफल उद्यमी बनने में सक्षम बनाया है। इससे न केवल उन्हें अपना और अपने परिवार का आर्थिक रूप से समर्थन करने की अनुमति मिलती है बल्कि उन्हें एजेंसी और स्वतंत्रता की भावना भी मिलती है। इसके अलावा इस कार्यक्रम का प्रभाव सिर्फ आर्थिक लाभ से कहीं अधिक है। इन महिलाओं द्वारा प्राप्त आत्मविश्वास और कौशल ने उन्हें सामाजिक मानदंडों को चुनौती देने और अपने समुदायों में नेतृत्व की भूमिका निभाने में मदद की है। अब उन्हें अन्य महिलाओं के लिए रोल मॉडल के रूप में देखा जाता है, जो उन्हें सामाजिक बाधाओं से मुक्त होने के लिए प्रेरित करती हैं। हालांकि, अभी भी सुधार की गुंजाइश है क्योंकि शिक्षा की कमी, संसाधनों तक पहुंच या बाजार संपर्क जैसी कई चुनौतियाँ ग्रामीण महिलाओं की प्रगति में बाधक बनी हुई हैं। इसलिए, यह महत्वपूर्ण है कि सरकारी नीतियां इन

मुद्दों को संबोधित करने के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रों में जीविका जैसे समान कार्यक्रमों का विस्तार करने पर भी ध्यान केंद्रित करें। कुल मिलाकर, जीविका ने आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देकर और उनके जीवन में सकारात्मक सामाजिक-आर्थिक प्रभाव पैदा करके ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति की है। निरंतर प्रयासों और इसमें शामिल सभी हितधारकों के समर्थन से, हम भारत में ग्रामीण महिलाओं के और सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

अध्ययन की सीमाएँ

जीविका कार्यक्रम के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं के स्वरोजगार और भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण पर इसके प्रभाव पर अध्ययन के दौरान कई सीमाओं का सामना करना पड़ा। सबसे पहले, अध्ययन का नमूना आकार बिहार के केवल एक जिले तक सीमित था। यह भारत भर के अन्य क्षेत्रों और राज्यों के परिदृश्य की व्यापक समझ प्रदान नहीं कर सकता है। परिणाम और निष्कर्ष सभी ग्रामीण क्षेत्रों के लिए सामान्य नहीं हो सकते हैं, इस प्रकार अध्ययन की बाहरी वैधता सीमित हो जाती है। दूसरे, समय की कमी के कारण, इस अध्ययन के लिए एक क्रॉस-सेक्शनल डिजाइन का उपयोग किया गया था। हालांकि इसने वर्तमान स्थिति में अंतर्दृष्टि प्रदान की है लेकिन इसने समय के साथ परिवर्तनों या चर के बीच कारण संबंधों के विश्लेषण की अनुमति नहीं दी। तीसरा, डेटा संग्रह प्रतिभागियों से स्व-रिपोर्ट उपायों पर बहुत अधिक निर्भर करता है जिससे सामाजिक वांछनीयता पूर्वाग्रह पैदा हो सकता है। प्रतिभागियों ने अपने वास्तविक अनुभवों और धारणाओं के बजाय जो सोचा था उसके आधार पर प्रश्नों का उत्तर दिया होगा। चौथा, भाषा की बाधाओं और संसाधनों की कमी के कारण, प्राथमिक डेटा संग्रह केवल उन महिला उद्यमियों के साक्षात्कार तक सीमित था जो जीविका कार्यक्रम का हिस्सा थीं। सरकारी अधिकारियों और परिवार के पुरुष सदस्यों जैसे अन्य हितधारकों की जानकारी से महिलाओं को स्व-रोजगार बनाने में आने वाली चुनौतियों के बारे में अतिरिक्त जानकारी मिल सकती थी।

अग्रगामी अनुसंधान

2007 में भारत सरकार द्वारा शुरू किए गए जीविका कार्यक्रम का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के बीच स्वरोजगार को बढ़ावा देना है। यह कार्यक्रम महिलाओं को उद्यमिता कौशल के साथ सशक्त बनाने के लिए वित्तीय सहायता और प्रशिक्षण प्रदान करता है, जिससे उन्हें अपना व्यवसाय शुरू करने की अनुमति मिलती है। इस पहल ने ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण क्षमता दिखाई है। अध्ययनों ने महिला सशक्तिकरण पर जीविका के माध्यम से स्वरोजगार के सकारात्मक प्रभाव को उजागर किया है। सबसे पहले, इसने इन महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता में वृद्धि की है, जिससे उन्हें गृहिणी के रूप में पारंपरिक भूमिकाओं से मुक्त होने और अपने घरों के लिए आर्थिक रूप से योगदान करने की अनुमति मिली है। एक स्थिर आय स्रोत के साथ, वे अपने परिवारों और समुदायों के भीतर अधिक निर्णय लेने की शक्ति प्राप्त करते हैं। इसके अलावा, व्यवसाय शुरू करने से इन महिलाओं को बाजार ज्ञान, वित्तीय प्रबंधन और संचार जैसे मूल्यवान कौशल भी मिलते हैं, जो न केवल उनके व्यवसाय को फलने-फूलने में मदद करते हैं, बल्कि उनके आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान को भी बढ़ाते हैं।

सन्दर्भ

1. चौधरी सीएआर. भारतीय महिलाओं का मानसिक अवसाद और दक्षिण-पूर्व एशिया में उच्च आत्महत्या दर - आज एक बड़ी चिंता का विषय है: एक मानवशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य। एन्थ्रोपोल 2009:1:111.

2. कौनण् विश्व मानसिक स्वास्थ्य रिपोर्ट: सभी कारकों के लिए मानसिक स्वास्थ्य में परिवर्तन। रिपोर्ट, विश्व स्वास्थ्य संगठन, मानसिक स्वास्थ्य और मादक द्रव्यों के सेवन विभाग 2022.
3. एनसीआरबी. भारत में आकस्मिक मृत्यु और आत्महत्या, राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरोय 2021, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
4. एरिएटा, ए, महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य के लिए सामाजिक होना महत्वपूर्ण है: ग्रामीण भारत में महामारी-पूर्व सर्वेक्षण से अंतर्दृष्टि। दक्षिण एशिया, अंतर्राष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थानय 2022.
5. बनर्जी ए, डुपलो ई, ग्लेनरस्टर आर, किन्नन सीण् माइक्रोफाइनेंस का चमत्कारघ् यादृच्छिक मूल्यांकन से साक्ष्यण् आमेर इकोन जेरु एपल इकोन 2009;7(1):22.53.
6. कैसिनी पी, वांडेवेले एल, वहहाज जेड। भारतीय ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक अच्छा प्रावधानरु माइक्रोफाइनेंस समूहों द्वारा सामूहिक कार्रवाई की वापसी। विश्व बैंक आर्थिक समीक्षाय 2015.
7. अरुणकुमार एस, आनंद ए, आनंद वीवी, रेंगराजन वी, श्याम एमण् सूक्ष्म वित्त के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनानारु एक अनुभवजन्य अध्ययन। इंडियन जर्नल ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी 2016;9(27)।
8. डिइनिंगर के, लियू वार्डण् भारत में स्वयं सहायता समूहों के आर्थिक और सामाजिक प्रभाव। विश्व बैंक नीति अनुसंधान वर्किंग पेपर। 2009 मार्च 1(4884)।
9. मुखर्जी एके, कुंडू ए, माइक्रोक्रेडिट और महिला एजेंसीरु पश्चिम बंगाल, भारत में सामाजिक-धार्मिक समुदायों में एक तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य। जेंडर टेक्नोल देव 2002;16(1):71.94।
10. मोयल टीएल, डॉलार्ड एम, बिस्वास एसएन। ग्रामीण भारतीय महिलाओं में व्यक्तिगत और आर्थिक सशक्तिकरणरु एक स्वयं सहायता समूह दृष्टिकोण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रुरल मैनेजमेंट 2006;2(2):245.66।
11. हाशमी एसएमए शुलर एसआरए रिले एपी। बांग्लादेश में ग्रामीण ऋण कार्यक्रम और महिला सशक्तिकरण। विश्व विकास 1996;24(4):635.53।
12. कृष्णराज एम, के टीण् एशिया में आईएफएडी लिंग मुख्यधारा परियोजनाओं की समीक्षा की रिपोर्ट॥, आईएफएडी के लिए तैयार अप्रकाशित पेपरय 2022.